वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी के बढ़ते कदम

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

शोध सारांश

हिन्दी ने आज यह सिद्ध कर दिया है कि परिवर्तन के अनुरूप, परिवेश के अनुसार स्वयं को ढालकर अभिव्यक्ति को बहुआयामी रूप प्रदान करने में वह उत्तरोत्तर सक्षम सफल हो रही है। उसका कारण है कि हिन्दी की जो सबसे बड़ी शक्ति है, वह है उसकी असंख्य शब्द निर्माण की क्षमता व उसकी समन्वयात्मक प्रवृत्ति; जिसके कारण वह अनेकानेक अन्य भाषाओं को भी सहजता से आत्मसात् कर रही है। इसके सशक्त प्रमाण आज के विज्ञान को सरल करना भी है

बीज शब्द– *हिन्दी भाषा,साहित्य,वैश्वीकरण और बढ़ते कदम।*

हिन्दी भाषा का साहित्य आज वैश्वीकरण के प्रभाव से अनेक विविध भाषाओं के माध्यम से विश्व पटल पर समृद्ध हो चुका है। आज का युग भूमण्डलीकरण के दौर से गुजर रहा है जिसमें वैश्वीकरण की चुनौतियाँ तकनीकी युग को आगे की ओर ले जा रहा है। आज व्यापार का युग है। विश्व के प्रत्येक देश कहीं न कहीं एक दूसरे पर निर्भर हैं, जिसके कारण एक देश को दूसरे देश की भाषा एवं साहित्य को सीखना बहुत ही महत्वपूर्ण हो चुका है। व्यापार के युग में अपने माल की उत्पादकता को बेचने के लिये उसी देश की भाषा में अपनें उत्पाद का प्रचार–प्रसार किया जाता है। इसी कारण धीरे–धीरे भाषाओं का वैश्वीकरण होता जा रहा है। हिन्दी भाषा वैश्वीकरण की चुनौतियों को स्वीकार करती हुई अपने उज्ज्वल भविष्य के द्वार पर खड़ी हो गई है।

राष्ट्रभाषा अपने राष्ट्र के निवासियों के अस्मिता की पहचान होती है। चीन, रूस, जापान, जर्मनी, फ्रांस आदि सभी समृद्ध देशों की अपनी राष्ट्रभाषा है। जबकि यह भारत का यह दुर्भाग्य ही है कि देश को स्वतंत्र हुए 74 वर्षों के व्यतीत हो जाने के बाद भी इसकी अपनी राष्ट्रभाषा नहीं स्वीकृत हो पायी है। यह विषम वेदना का विषय है कि पाकिस्तान और बांग्लादेश सरीखे देश भी इस मुद्दे पर भारत से आगे हैं। यूनेस्को के अनुसार 'भाषा केवल सम्पर्क, शिक्षा या विकास का माध्यम न होकर व्यक्ति की विशिष्ट पहचान होती है। उसकी संस्कृति, परम्परा एवं इतिहास का कोश है।' इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक भाषा अपने साथ एक विशिष्ट ज्ञान परम्परा का संवहन करती है और राष्ट्र की विकास प्रक्रिया को बढ़ाने में शान्तिपूर्ण प्रयास करती है। इस तथ्य से महात्मा गाँधी जी भली–भाँति परिचित थे कि राष्ट्र के समग्र विकास के लिए उसकी अपनी एक राष्ट्रभाषा अवश्य होनी चाहिए। तभी वे राष्ट्रभाषा की आवश्यकता के प्रश्न पर प्रतिप्रश्न करते हुए स्पष्ट कहते हैं कि''अंग्रेजी तो विश्वभाषा है मगर क्या हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा बन सकती है? राष्ट्रभाषा तो लाखों लोगों को जाननी चाहिए, वे अंग्रेजी भाषा का बोझ कैसे उठा सकेंगें? हिन्दी स्वभाव से राष्ट्रभाषा है

क्योंकि वह लगभग 40 करोड़ भाारतीयों की मातृभाषा है।'' अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए वे रोमन लिपि अपनाने की संभावना को खारिज करते हुए आगे कहते हैं कि ''अगर हिन्दुस्तान को एक राष्ट्र बनना है अथवा वह एक राष्ट्र है तो हमें एक राष्ट्रभाषा तो चाहिए ही। इसलिए मेरी दृष्टि से अंग्रेजी विश्व भाषा के रूप में ही रहे और शोभा पाये। इसी तरह रोमन लिपि भी विश्व लिपि के रूप में ही रहे और शोभा पाये .....रहेगी .....और शोभेगी। हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा की लिपि के रूप में कभीं नही।''

वर्तमान में वैश्वीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिंदी ने विश्व भाषा के रूप में स्वयं को स्थापित किया है। अनेकों बाधाओं को पार करती हुई हिंदी भारत से बाहर नेपाल, भूटान, सिंगापुर, चीन, जापान, इंग्लैंड, अमेरिका, इटली, रोमानिया, जर्मनी, रूस, हॉलैंड, मारीशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में अध्ययन और अनुसंधान अकादमिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति कर रही है। विश्व के 150 देशों में एक करोड़ बीस लाख भारतीय मूल के लोगों में से अधिकांश हिंदी भाषा का प्रयोग कर विदेशों में भारतीयता का बोध करा रहे हैं।

भूमण्डलीयकरण के आवेग के मध्य राष्ट्रभाषा को गौरवान्वित करने की जितनी आवश्यकता है उतनी ही विश्व मंच पर हिन्दी को समष्टिगत व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित करने का दायित्व भी हमारा है। इक्कीसवीं सदी में कार्य व्यवहार एवं राष्ट्रीयता में हिन्दी भाषा का प्रसार एवं प्रचार करने में प्रवासी भारतीयों का विशेष योगदान हो रहा है। वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय चेतना के साथ हिन्दी भाषा की भविष्यगत सम्भावनाओं के मूल्यांकन में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को आत्मसात् करना अनिवार्य होता प्रतीत होता है। हिन्दी के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के लिए आवश्यकता इस बात की भी है। समस्त भारतीय जो विदेशों में रहकर भाषिक साधना के साथ सक्रियता के साथ चुनौतियों के साथ अपनी राष्ट्रभाषा को पुष्पित व पल्लिवित करने में लगे हुए हैं – वह भूमण्डलीकरण की चुनौतियों का सामना करने में भी हिन्दी को दिशा दे सकें। स्वतंत्रता संग्राम के महान पुरोधा तिलक हिन्दी को राष्ट्रभाषा तथा देवनागरी को हिन्दी की लिपि मानते हैं। पंडित मोहन मालवीय के अथक परिश्रम से अदालतों से नागरी को प्रवेश मिला। राजर्षि पुरूषोत्तम टण्डन जी ने सारा जीवन हिन्दी के प्रचार प्रसार में लगा दिया। गाँधी जी ने हिन्दी के लिए अथक् प्रयास किया। आज हिन्दी जिस मंजिल पर है उसे यहाँ तक लाने में संस्थाओं, नेताओं, विद्वानों एवं लेखकों की अक्षय तपस्या है।

आज हिन्दी के पास भाषा विकास के महत्वपूर्ण साधन है। कविता, नवगीत, उपन्यास, कहानी, आत्मकथा, संस्मरण के लेखन से विशाल शब्दावली विकसित हो रही है। संस्कृत भाषा में शब्दों के निर्माण के लिए धातुओं का कल्पवृक्ष है। संस्कृत की दो हजार धातुओं से आठ लाख शब्द निर्मित किये जा सकते हैं। वैज्ञानिक एवं तकनीकी के दो लाख से अधिक शब्द तैयार किये जा चुके हैं। अवहट्ट से हिन्दी के शब्दों का अपूर्व निर्माण हुआ। विदेशी भाषाओं से अनुवाद भी द्रुत गति से किया जा रहा है। इसके लेखन के लिए देवनागरी लिपि है। इसमें आदर्श लिपि के गुण हैं। 'इसमें एक ध्वनि के लिए एक वर्ण है। इसका प्रत्येक अक्षर उच्चारित होता है। इसका वर्णक्रम वैज्ञानिक है। पहले स्वर, दीर्घ क्रम में तत्पश्चात व्यंजन हैं। यह जिन भाषाओं के लिए व्यवहृत होती है उनकी सभी ध्वनियों को अंकित करने में समर्थ है। इस लिपि के लेखन और मुद्रण के अक्षर एक रूप हैं।हिन्दी की लिपि की विशेषताओं के साथ उसकी महती विशेषता है, सभी भाषाओं से शब्द ग्रहण करने की शक्ति। आज ज्ञान का क्षेत्र पहले की तुलना में विराट् है। मनुष्य की सोच अधिक व्यापक हुई है, जिसका प्रचार–प्रसार अनेक भाषाओं के माध्यम से हो रहा है। हिन्दी

अंग्रेजी की भाँति अनेक भाषाओं के शब्दों में ग्रहण कर रही है। जिस प्रकार भारतीय संस्कृति अनेक संस्कृतियों से शक्ति ग्रहण करती रही हैं। यहाँ के प्राचीन संस्कृति आचार्यों ने ज्योतिष के यवनाचार्यों को ऋषि के श्रेणी में रखा था उसी प्रकार हिन्दी दूसरी भाषाओं से जर्मन, फ्रेंच, रूसी, फ्रांसीसी, जापानी सभी से शब्द ग्रहण करती है। इससे भाषा की शक्ति में विवर्धन हुआ है। शिक्षार्थी हिन्दी शब्दकोश में डॉ0 हरदेव बाहरी ने उन अंग्रेजी शब्दों की सूची दी है जो हिन्दी की सम्पत्ति बन चुके हैं। इस सूची में 2500 शब्दों की लिस्ट दी गई है वैसे आज वैज्ञानिक तकनीकी शब्दों को तेजी से ग्रहण किया जा रहा है। यह हिन्दी की विकसनशीलता है। पहले से ही फारसी, अरबी, संस्कृत आदि के शब्दों को ग्रहण किया गया है। हिन्दी भाषा की विकसनशीलता एवं इसके बोलने वालों की संख्या की शक्ति को देखते हुए इसे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मूल्य देने की बात आज के वैश्वीकरण के युग में अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गयी है।

आज वैश्वीकरण के युग में हिन्दी के विस्तार के बारे में विचार करना स्वाभाविक है। हिन्दी के पास शब्द हैं लिपि है। वैश्वीकरण में शक्तिशाली राष्ट्र सांस्कृतिक उपनिवेश के रूप में अपनी सत्ता की स्थापना करना चाहते हैं। विश्व बाजार के लिए स्वस्थ नवयुवकों की जरूरत है। भारत नवजवानों का देश है–यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन में बूढ़ों की आबादी अधिक है। ऐसी स्थिति में भविष्य भारत का दिखाई देता है। ऐसे में भारतीय संस्कृति, सभ्यता के प्रसार का अवसर, भारतीय संस्कृति, सभ्यता के प्रसार का अवसर, भारतीय मेघा के बल पर संभव है।

हिन्दी वर्तमान में मात्र भारत की भाषा के परिधि आगे बढ़कर अन्तर्राष्ट्रीय संपर्क भाषा के रूप में उभर कर सामने आ रही है। हिन्दी भाषा को अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करनें में बाजारीकरण विश्वभाषाओं में हो रहे अनुवाद प्रवासी भारतीयों की संख्या में हो रही वृद्धि आदि भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हिन्दी भाषा को विश्व के ज्यादातर देशों में प्रचलित करनें का श्रेय प्रवासी भारतीयों को दिया जा सकता है। पहले लोग गरीबी के कारण मजबूरी में विदेश जाते थे। लेकिन वर्तमान में स्थिति परिवर्तित हो गई है। अब अच्छी नौकरी या अधिक धन कमानें के उद्देश्य से लोग विदेश जाते हैं। फिर भी लोगों के अन्दर अपने मातृदेश के प्रति प्रेम बना रहता है। उन लोगों के अन्दर विदेशी भाषा एवं संस्कृति का प्रभाव जरूर दिखाई पड़ता है। लेकिन उनमें अधिकांश लोगों के अन्दर अपनी मातृ भाषा एवं मातृ देश के प्रति लगाव बना रहता है। ऐसे लोगों के द्वारा हिन्दी भाषा एवं साहित्य विश्व के अनेकानेक देषों में प्रचलित होनें लगा। वर्तमान समय में मारीशस, फीजी, त्रिनिदाद जैसे देशों में बहुत अधिक मात्रा में भारतीय पाये जाते हैं। इसके अलावा सूरीनाम, गुयाना, एशिया महाद्वीप के जापान, चीन, श्रीलंका, मलेषिया, पाकिस्तान, थाईलैंड, नेपाल, दक्षिण कोरिया, यूरोप महाद्वीप के ब्रिटेन, फ्रांस, रूस तथा अमेरिका जैसे विभिन्न देशों में हिन्दी भाषा का अध्ययन एवं साहित्य का प्रचार–प्रसार हो रहा है।

आजकल प्रवासी भारतीयों द्वारा विदेशों में अनेक पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन भी हो रहा है। विदेशों में कई ऐसी संस्थायें हैं, जो हिन्दी को प्रतिष्ठित करनें में मदद कर रहा है। इनमें मारीषस हिन्दी समाज, आर्य समाज, हिन्दी परिषद और अमेरिका के विद्या–भवन, अखिल भारतीय हिन्दी समिति, हिन्दी अन्तर्राष्ट्रीय समिति तथा इंग्लैण्ड के यू.के. समिति, गीतांजलि, भारतीय भाषा संगम नेहरू सेन्टर, वातायन आदि संस्थायें महत्पूर्ण कार्य कर रही हैं। इसके अतिरिक्त विष्व भर के हिन्दी प्रेमियों तथा शास्त्रियों के उत्साह से शुरू हुये विष्व हिन्दी सम्मेलन में भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार में उल्लेखनीय कदम उठा रहा है।

हिन्दी सहित समस्त भारतीय भाषाओं को यहाँ का अंग्रेजीदां वर्ग शैक्षिक, प्रशासनिक, आर्थिक, सामाजिक तथा अन्य क्षेत्रों से निकाल बाहर करना चाह रहा है। इस साजिश का पर्दाफाश करते हुए प्रो0 जोगा सिंह बिर्क अपने लेख 'भाषाओं पर मँडराता खतरा' में कहते हैं–''भारतीय उपमहाद्वीप में मातृभाषाओं की जो दुर्दशा स्वतंत्रता के बाद हुई है, वह पहले कभी नहीं हुई थी। अंग्रेजी को हर क्षेत्र में ऊँचा दर्जा दिये जाने के कारण जनसाधारण को अपनी भाषाओं की शक्ति पर भी संदिग्धता होने लगी है और भाषायी दिमागी गुलामी स्वतंत्रता से पहले से भी गहरी हो गयी है।'' इस प्रकार हिन्दी को राष्ट्रभाषा न बनने देने के लिए अंग्रेजी परस्तवर्ग अपनी दुरभिसंधियों से बाज नही आता है। इसके लिए सरकार से हिन्दी भाषी नेताओं, अधिकारियों, शिक्षकों, विद्वानों तथा अन्य प्रबुद्ध वर्ग को यह माँग करनी चाहिए कि वह अविलम्ब उच्च एवं सर्वोच्च न्यायालयों में हिन्दी भाषा को अंग्रेजी के बराबर स्थान दिलाये। जहाँ जरूरत हो, उन राज्यों में हिन्दी और अंग्रेजी के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषाओं में न्यायालय की कार्रवाई सम्पन्न करवाने की व्यवस्था हो। अगर हम धर्माधिकारी श्री चन्द्रशेखर महोदय के शब्दों में कहें तो ''लोकतांत्रिक न्याय प्रणाली में लोगों पर अंग्रेजी भाषा थोपना, यह तानाशाही और साम्राज्यवादी प्रवृति है। इससे मुक्ति आवश्यक है। आखिर लोकतांत्रिक समाज रचना में न्यायदान की प्रक्रिया लोकाभिमुख होनी चाहिए और इसके लिए लोकभाषा के प्रयोग के सिवा अन्य कोई मार्ग दिखाई नहीं देता है। आज जिसका मामला अदालत में चलता है, उसे अपने मामले में चल रही बहस या होने वाला फैसला या निर्णय पता ही नहीं चले, ऐसी योजना कायम रखना यह सामान्यजन के खिलाफ स्थापित वर्ग द्वारा किया जाने वाला अवांछनीय और अन्यायपूर्ण षड्यंत्र है।''

इस समय विश्व के लगभग सभी देशों में हिन्दी भाषा का प्रयोग हो रहा है। संयुक्त राष्ट्रसंघ के सर्वेक्षण के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी को जानने वालों की संख्या एक सौ दस करोड़ से अधिक है। मारीशस एवं फिजी में हिन्दी बोलने वालों की संख्या 70 प्रतिशत है। सूरीनाम, त्रिनिदाद, टोबैगो, गुयाना आदि देशों में 50 प्रतिशत लोग हिन्दी का प्रयोग करते हैं। इंडोनेशिया, थाइलैण्ड, चीन, जापान, यूरोप, अमेरिका आदि देशों में लोग हिन्दी भाषा जानते हैं। फ्रांस, इटली, स्वीडन, ऑस्ट्रेलिया, डेनमार्क, नार्वे, पोलैण्ड चेक जर्मन, रोमानिया, हंगरी, तुर्की, इराक, मिश्र, यंसुक्त अरब राज्य पाकिस्तान आदि देशों में हिन्उदी का उपयोग होता है। विश्व के 73 देशों के 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पठन–पाठन एवं अनुसंधान की सुविधा उपलब्ध है। श्रीलंका के तीनों विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्यापन कार्य होता है। चीन में आकाशवाणी पर तथा ब्रिटेन में बी0बी0सी0 पर हिन्दी का वर्चस्व है और वहाँ के करोड़ों लोग इसके मुरीद हैं।

आज हिन्दी को विष्व मंच पर ले जाने में आधुनिक संचार माध्यमों तथा प्रौद्योगिकी का विशेष योगदान है। औद्योगिक उत्पादकों के बढ़ते हुये बाजार का भाषा से सीधे सम्बन्ध है। भाषा ही वाणिज्य की सबसे प्रमुख कड़ी है। अलग–अलग देषों में जनता तक उत्पाद को पहुचानें के लिये उनकी भाषा को जानना बहुत आवश्यक है। विज्ञापनों द्वारा ही सभी उत्पादों की बिक्री होती है। यहॉ विश्व में सबसे अधिक प्रयोग करनें वाली हिन्दी भाषा में विज्ञापन करनें से ही बहुसंख्या तक उत्पादों को पहुंचाया जा सकता है। विश्व के अनेक देशों में हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन तथा मुद्रण होता है। सम्पूर्ण संसार में लोग हिन्दी भाषा में अन्तर्जाल तथा मोबाइल द्वारा संदेशों का आदान–प्रदान करते हैं। यहाँ उल्लेखनीय बात है कि अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी भाषा को टंकण

माध्यम बनानें में सूचना एवं प्रौद्योगिकी का विकास सहायक सिद्ध हुआ है।

विदेशों में 150 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी उच्चतर शिक्षण के रूप में पढ़ाई जा रही है। एक सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी ने अपनी अलग पहचान बनाई है। अंग्रेजी और चीनी के बाद विश्व की भाषाओं में हिन्दी को तीसरा स्थान प्राप्त है। यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, बुल्गारिया, जर्मनी, स्वीडन, स्पेन, पोलैण्ड, फ्रांस, हंगरी, इटली, मॉरीशस, कनाडा, जापान तथा इंग्लैण्ड आदि विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पठन–पाठन के अतिरिक्त शोध कार्य भी हो रहे हैं। भारत के हिन्दी के अनेक महत्त्वपूर्ण कवियों–कबीर, सूर, तुलसी से लेकर उपन्यासकार प्रेमचंद, अमृतलाल नागर, यशपाल तथा निर्मल वर्मा आदि की कृतियों का विभिन्न भाषाओं में धड़ल्ले से अनुवाद हो रहा है। यही नहीं विदेशों में भारतीय रचनाकारों की कृतियों पर केन्द्रित तुलनात्मक अध्ययन हिन्दी की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

एक आँकड़े के अनुसार–जर्मनी के 20 विश्वविद्यालयों में आज हिन्दी के स्वतंत्र विभाग हैं तथा अमेरिका के 35 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन–पाठन हो रहा है। अमेरिका में आरंभिक स्तर पर हिन्दी को वैकल्पिक भाषा के रूप में अपनाया गया है। ब्रिटेन में हिन्दी जिस गति से आगे बढ़ रही है उसे देखकर हर्षमिश्रित आश्चर्य होता है। वहाँ कार्यालय, पुस्तकालय, बैंक, सिनेमाघर, दूरदर्शन आदि में हिन्दी का जबर्दस्त नेटवर्क है। ब्रिटेन में रहते हुए डॉ0 उषाराजे सक्सेना, प्राण शर्मा, अचला शर्मा, गौतम सचदेव, दिव्या माथुर आदि साहित्यकार न केवल हिन्दी की मशाल जलाए हुए हैं अपितु निरंतर साहित्यिक गोष्ठियाँ तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करके हिन्दी को मुख्यधारा से जोड़ने के लिए कृतसंकल्प हैं।

मॉरीशस में भी हिन्दी को लेकर एक अलग ढंग का उत्साह है। वहाँ के माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी कैम्ब्रिज स्कूल सर्टिफिकेट तक पढ़ाई जाती है। विश्वविद्यालय स्तर पर हिन्दी शिक्षण के साथ–साथ शोध कार्य भी निरंतर हो रहे हैं। वहाँ की प्रमुख संस्थाएँ– हिन्दी प्रचारिणी सभा, आर्य सभा मॉरीशस, हिन्दी लेखक संघ, हिन्दी अकादमी, साहित्य संवाद तथा इन्द्रधनुष सांस्कृतिक परिषद हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए निंरतर कटिबद्ध हैं। रेडियो और दूरदर्शन हिन्दी के कार्यक्रमों को रुचिपूर्वक परोस रहे हैं। आज मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय है, जिसके माध्यम से हिन्दी की अनेक महत्त्वपूर्ण योजनाएँ फलीभूत हो रही हैं। विश्व हिन्दी सचिवालय का समृद्ध पुस्तकालय हिन्दी के बहुआयामी ग्रन्थों से समृद्ध है। जयनारायण राय, बेणीमाधव, रामखेलावन, रसपुंज, भगत पूजानंद नेमा, लीलाधर, सुमति बुधन आदि साहित्यकार हिन्दी को बुलंदी तक पहुँचाने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हैं।

फिजी में सरकारी स्तर पर अंग्रेजी के साथ हिन्दी का प्रयोग आवश्यक है। फिजी सरकार का सूचना विभाग अपने पोस्टर हिन्दी भाषा में भी निकालता है। वहाँ के बाजारों में साइनबोर्ड अंग्रेजी के साथ हिन्दी में भी लिखे जाते हैं। विदेशों में हिन्दी का बढ़ता वर्चस्व कहीं न कहीं निश्चित रूप से हमें आश्वस्त करता है। सूरीनाम में तो हिन्दी का आधिकारिक रूप में प्रयोग होता है। वहाँ ढेर सारी सूचनाएँ हिन्दी में उपलब्ध हैं। सरकार में मंत्री बनने के लिए हिन्दी जानना अनिवार्य है। न्यूजीलैण्ड में भारतीय सिनेमा का प्रचलन जोरों पर है। पाकिस्तान में लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में हिन्दी एक वैकल्पिक विषय है।

विदेशों में बहुसंख्यक भारतीय निवास करते हैं वहाँ व्यावसायिक दृष्टि से संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का ही प्रयोग किया जाता है। इंग्लैण्ड, कनाडा, अमेरिका, नार्वे, स्वीडन, फिजी, त्रिनिदाद, मलेशिया, सिंगापुर आदि देशों में हिन्दी के कैसेट, सी0डी0 सर्वाधिक बिकते हैं। केन्द्रीय

हिन्दी संस्थान, आगरा में हिन्दी पढ़ने के लिए आने वाले 67 देशों के विदेशी छात्रों ने इस बात की पुष्टि की कि–हिन्दी फिल्मों को देखकर तथा हिन्दी फिल्मी गानों को सुनकर उन्हें हिन्दी सीखने में मदद मिली। (टी0वी0) दूरदर्शन के विभिन्न चौनलों से प्रसारित हिन्दी कार्यक्रमों की लोकप्रियता का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि जिन चौनलों ने भारत में अपने कार्यक्रमों का आरंभ केवल अंग्रेजी से किया था उन्हें अपनी भाषा–नीति मे परिवर्तन करना पड़ा।

स्टार प्लस, जी0टी0वी0, जी न्यूज, डिस्कवरी, नेशनल ज्योग्राफिक आदि अनेक कार्यक्रम हिन्दी में लगातार प्रसारित हो रहे हैं। इनकी टी0आर0पी0 दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। कई जापानी–चाइनीज कार्यक्रम भी हिन्दी में डब करके दिखाए जा रहे हैं। बच्चों मे कार्टून नेटवर्क सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। अमेरिका मे प्रसारित होने वाला कार्यक्रम 104.9 एफ0एम0चौनल– रेडियो सलाम नमस्ते पर 'कवितांजलि' कार्यक्रम हर रविवार को रात्रि नौ बजे से प्रसारित किया जाता है जो प्रवासी भारतीयों के जीवन का अनिवार्य अंग बन चुका है।

विदेशों में हिन्दी पत्रिकाओं की संख्या भी हमें आश्वस्त करती है कि इनका भविष्य उज्ज्वल है। यू0के0 से 'पुरवाई', 'अमरदीप', 'चेतक', 'प्रवासिनी हिन्दी' अमेरिका से 'विश्वा', 'विश्वविवेक', 'सौरभ', 'भारती', नार्वे से 'स्पाइल दर्पण', 'शांतिदूत' फिजी से 'लहर' और संस्कृति', मॉरीशस से 'मुक्ता', 'आक्रोश', 'सरस्वती', 'भारतोदय', कनाडा से 'हिन्दी चेतना' तथा आस्ट्रेलिया से 'चेतना' आदि पात्रिकाएँ निरंतर प्रकाशित हो रही हैं। अमेरिका की पत्रिका 'स्पेन' अब हिन्दी में भी प्रकाशित होती है। ब्रिटिश उच्च आयोग की पत्रिका 'ब्रिटिश समीक्षा' हिन्दी में निकलती है। इनके माध्यम से विदेशों में न केवल विपुल मात्रा में लेखन हो रहा है, अपितु ये पत्रिकाएँ साहित्यकारों को मंच पर लाकर हिन्दी को गौरव प्रदान कर रही हैं।

जापानी मूल की हिन्दी लेखिका तोमोको किकुचि अपने लेख 'दुनिया के हर कोने में है हिन्दी' में इसके विदेश में प्रचार–प्रसार का उल्लेख करती हुई कहती हैं– ''बोलचाल की भाषा के रूप में हिन्दी भाषा का प्रसार अब विश्वव्यापी है। इसमें हिन्दी फिल्मों की खास भूमिका है। हिन्दी फिल्में गैर हिन्दी भाषियों को भी हिन्दी की ओर आकर्षित करती हैं। हिन्दी फिल्मों को दुनिया की कई भाषाओं में डब भी किया जाने लगा है। जापान में हिन्दी फिल्मों की लोकप्रियता बहुत बढ़ रही है। फिल्मों के जरिये हिन्दी भाषा कई देशों और संस्कृति के लोगों को एक–दूसरे से जोड़ रही है।'' यह कथन इस बात का प्रमाण है कि आज की हिन्दी आजादी के बाद हिन्दी नहीं रह गई है। हाल के वर्षों में हिन्दी ने उल्लेखनीय प्रगति की है। ''आज बाजार से लेकर विचार तक हिन्दी का महत्त्व दिख रहा है। इण्टरनेट, विज्ञापनों, फिल्मों व उपन्यासों की हिन्दी से भले ही अतिशुद्धतावादी असहमत हों लेकिन यह भी सच है कि हिन्दी के इस रूप को युवा वर्ग ने अपना लिया है। हिन्दी के संदर्भ में संचार माध्यम की यह एक बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। हिन्दी का यह स्वरूप उसकी समाहति करने की प्रवृत्ति के कारण है।'' आज हिन्दी के विशाल बाजार और उपभोक्ता संसार के कारण तकनीकि के क्षेत्र में खूब प्रगति की है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए वरिष्ठ पत्रकार श्री बालेन्दु शर्मा 'दधीचि' अपने 'हिन्दी का नया गंतव्य' शीर्षक लेख में लिखते हैं– ''हिन्दी में अच्छे फांट आ गये हैं। कई किस्म के टाइपिंग की–बोर्ड आ गये हैं। यूनीकोड आ गया है। ध्वनि से टाइपिंग की तकनीकी आ गई है। व्याकरण की जाँच होने लगी। पुराना टेक्स्ट भी कन्वर्ट होने लगा। हिन्दी में खोज होने लगी। हिन्दी के मोबाइल एप्स आ गये हैं। हिन्दी में सोशल नेटवर्किंग आ गई। ईमेल और ब्लॉगिंग आ गई

है। अखबारों से लेकर वीडियो चौनलों तक के अनुप्रयोग में हिन्दी चलने लगी। ग्राफिक्स और एनीमेशन में हिन्दी आ गई। ओसीआर, हस्तलिपि की पहचान जैसा आधुनिक अनुप्रयोग भी आ गये हैं। सभी जरूरी सॉफ्टवेयरों का हिन्दीकरण भी हो गया है।'' इस तरह आज की हिन्दी तकनीकि समृद्धि और सुविधाओं से सम्पन्न हो गयी है। अपने संख्याबल के कारण यदि हिन्दी संसार उपलब्ध तकनीकि का भरपूर दोहन करें तो यह भविष्य की सबसे सशक्त व समृद्ध भाषा बन सकती है।

वैश्विक स्तर पर हिन्दी के विकास में भारतीय प्रवासियों का महत्वपूर्ण योगदान है। मात्र भारत में ही प्रचलित हिन्दी भाषा को विष्व के कोने–कोने तक पहुंचाने का श्रेय उन्हें ही जाता है। अंग्रेजी शासन काल में भारतीयों को मजदूरी के लिये जबरदस्ती विदेशों में भेजा गया था। हजारों लोग यात्रा के बीच ही मृत्यु को प्राप्त हो गये। शेष लोग वर्षो तक यातनायें, अपमान सहते हुये विदेशों में अपना एक छोटा समाज बनाया। इनमें भारत के सभी राज्यों से आये हुये विभिन्न भाषा–भाषी थे। लेकिन बहुमत हिन्दी भाषी होने से तथा हिन्दी की सरलता के कारण अन्य भाषा–भाषी भारतीय प्रवासी भी हिन्दी सीखने लगे। उन भयंकर यातनाओं का समय गुजर गया, लेकिन आज भी नौकरी पाने तथा जीवन–यापन करनें हेतु प्रवास को अपनानें वाले भारतीयों में बहुत संख्या में अनेक यातनाओं का सामना कर रहे हैं। इन परिस्थितियों में भारतीय हिन्दी भाषी प्रवासी समाज के लोग मिल–जुलकर इन पीड़ितों की सहायता करते रहते हैं। प्रवासियों के लिये हिन्दी मात्र भाषा ही नहीं, अपितु उन्हें अपने संवेदनाओं को व्यक्त करने तथा परिवार एवं देश से जुड़े रहने का माध्यम भी है।

भारत की सन् 2011 ई0 की जनगणना के अनुसार विश्व के 80 करोड़ लोग हिन्दी बोल और समझ लेते थे। विगत 2015 में प्रो0 करुणाशंकर उपाध्याय के द्वारा कराये गये सर्वेक्षण में यह संख्या दुनिया के सभी 206 देशों में एक अरब तीस करोड़ हो गई है, जो पूर्व में सर्वाधिक बोले जानी भाषा मंदारिन से भी अधिक हो गई है। विश्व के एक सौ पचास देशों में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था है तथा इक्यानबे विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग हैं। 'यूनेस्को' की सात भाषाओं में हिन्दी पहले से ही शामिल है। साइबर स्पेस की भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व निरन्तर बढ़ता जा रहा है। भाषाशास्त्री अशोक केलकर का मानना है कि हिन्दी वैश्वीकरण की भाषा की दौड़ में सबसे आगे है। आपका मानना है कि ''यद्यपि वैश्वीकरण की शुरुआत उद्यम के क्षेत्र से हुईय फिर धीरे–धीरे यह क्रिया जीवन के अन्य क्षेत्रों को व्याप्त कर रही है। भाषा भी इसका अपवाद नहीं है जिस तरह शब्द वैश्विक बनते हैं उसी तरह भाषाएँ भी बन सकती हैं। फ्रेन्च, स्पेनिश, अंग्रेजी– ये पहली वैश्विक भाषायें थीं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने बाद में इसमें रूसी और चीनी को भी सम्मिलित कर लिया। बाद में अरबी को भी, जबकि हिन्दी और जापानी इस दौड़ में शामिल है।'' हिन्दी के प्रचार–प्रसार में कतिपय अन्य कारक भी हैं यथा– दूरसंचार माध्यमों (दूरदर्शन आदि) में हिन्दी कार्यक्रमों–धारावाहिकों आदि की लोकप्रियता, हिन्दी फिल्मों का वैश्विक प्रसार, देश और विश्व की लगभग समस्त महत्वपूर्ण भाषाओं में हिन्दी की महत्वपूर्ण कृतियों का अनुवाद तथा उन भाषाओं की महत्वपूर्ण कृतियों का हिन्दी में अनुवाद आदि। हिन्दी की इन समस्त विशेषताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिन्दी की विश्व–यात्रा निरन्तर जारी है।

सन्दर्भ

1. भाषा और समाज–राम विलास शर्मा–राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, तीसरा संस्करण–1989

2. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा–राम विलास शर्मा–राजकमल प्रा.लि. 1 बी नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–110002, प्र. सं.–2001
3. राष्ट्रभाषा हिन्दी–राहुल सांकृत्यायन–राधाकृष्ण प्रकाशन, जी–17, जगतपुरी दिल्ली–110051, प्र. संस्करण–2002, आवृत्ति–2004
4. हिन्दी भाषा–महावीर प्रसाद द्विवेदी–वाणी प्रकाशन–21 ए दरियागंज, नई दिल्ली 110002, संस्करण–1995
5. राष्ट्रभाषा हिन्दी–गोपी कृष्ण राठी, मधुकर, गोवर्धन शर्मा, रूपा बुक्स प्रा.लि. एस–12 शापिंक काम्पलेक्स तिलक नगर जयपुर–302004, प्र.सं.–1995
6. मणिक मृगेश, राजभाषा की प्रवृतियाँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
7. मुले, गुणाकर शर्मा, सुभाष, मिश्र, देवेन्द्र (सं.), हिन्दी भाषाः विविध आयाम, साहित्य संसद, नई दिल्ली, 2006
8. Mangalam Kumar, S. Mohan, India's Languages Crisis An introductory study. New Century, Book House, Madras, 1965
9. मालती दुबे, वैश्विक परिपेक्ष्य में हिन्दी, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद, 1999
10. मलिक मोहम्मद, राष्ट्रभाषा विकास के विविध आयाम, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2002
11. मालती दुबे, वैश्विक परिपेक्ष्य में हिन्दी, पार्श्व पब्लिकेशन, अहमदाबाद, 1992, प्राक्कथन
12. मलिक मोहम्मद, राजभाषा हिन्दी विकास के विविध आयाम, राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली, 1982
13. मोहनलाल भट्ट, (प्रकाशक), रजत जयंती ग्रंथ, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, 1962
14. महावीर प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी भाषा, वाणी प्राकशन, नई दिल्ली, 2003
15. निवास शास्त्री, पी.आर. कर्नाटक में हिन्दी प्रचार की गतिविधियाँ, कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति, बैंगलोर, 1998
16. एन. वेंकटेश्वर, संपादक, दक्षिण में हिन्दी प्रचार आन्दोलन का इतिहास, ऑफसेट डिविजन, 1994